

# बांग्ला साहित्य और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का दो दिवसीय समापन समारोह

16 अक्टूबर 2022, साहित्य अकादेमी द्वारा अकादेमी सभागार, कोलकाता में “बांग्ला साहित्य और भारतीय संग्राम” विषयक द्विदिवसीय संगोष्ठी के अंतिम दिन समापन भाषण देते हुए विद्यासागर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. शिवाजी प्रतिम बसु ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में राष्ट्रीयता की अवधारणा और बांग्ला साहित्य पर इसके प्रभाव पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि बांग्ला साहित्य का विकास प्रति-उपनिवेशवादी राष्ट्रीयता के समय में हुआ। उन्होंने कहा कि बंकिमचंद्र ने जिस राष्ट्रवाद की नींव रखी, उसे हिंदू राष्ट्रवाद के नाम से जाना जाता है, जबकि रवींद्रनाथ ठाकुर ने राष्ट्रवाद के प्रचलित सिद्धांत पर सवाल उठाए। इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रो. तपोधीर भट्टाचार्य ने राष्ट्रवादी बांग्ला साहित्य का आधुनिक दृष्टि से मूल्यांकन प्रस्तुत किया। इस अवसर पर समाहार वक्तव्य देते हुए डॉ. सुबोध सरकार ने स्वतंत्रता के विभिन्न स्वरूपों की चर्चा की। इस सत्र का संचालन अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. देवेन्द्र कुमार देवेश ने किया। समापन सत्र के पूर्व आयोजित संगोष्ठी के पाँचवें सत्र में अशोक मुखोपाध्याय, चंदन सेन और प्रो. गोपा दत्त भौमिक ने ‘1947 के बाद के बांग्ला साहित्य में चित्रित स्वतंत्रता संघर्ष’ विषयक अपने आलेख प्रस्तुत किए। छठा सत्र ‘साहित्य: हथियार अथवा दर्पण’ विषय पर केंद्रित था। इस सत्र में अशोक कुमार गांगुली, प्रो. इप्सिता चंदा एवं प्रो. समर्पिता मित्र ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इन सत्रों का संचालन डॉ. मिहिर कुमार साहु ने किया। संगोष्ठी की अंतिम प्रस्तुति के रूप में फिल्मस डिविजन, भारत सरकार के सौजन्य से ‘इंडिया विस फ्रीडम’ शीर्षक वृत्तचित्र का प्रदर्शन किया गया।





# बांग्ला साहित्य और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का दो दिवसीय समापन समारोह

